वृत्तपत्राचे नांव :– लोकमत समाचार
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– नागपूर
वृत्तपत्र पान क्र :– 8
दिनांक :–27/11/2005

वेद विचार

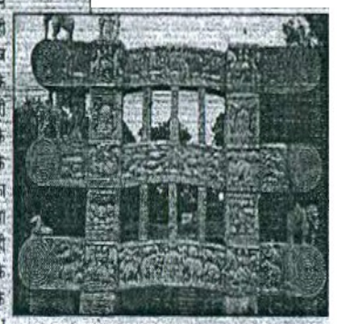

वेद किसी खास ग्रंथ का नाम नहीं, बल्कि ग्रंथ-समूह वेद कहलाता है. इसको लेकर खासे विवाद भी हैं. कुछ लोग आरण्यक और उपनिषद् के हिस्से को निकालते हुए महज मंत्र और ब्राह्मणों के संग्रह को वेद मानकर चलते हैं, तो कुछ चारों के जोड़ को वेद [illegible] देते हैं. इस तरह से मंत्र+आरण्यक+ब्राह्मण+उपनिषद = वेद समूह. चार वेद हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद.

ऋग्वेद के जानने वाले को ऋत्विक, यजुर्वेद ज्ञाता को अध्वर्यु, सामवेद ज्ञानी को उद्गाता और अथर्ववेदी को ब्रह्मा कहा जाता है. ऋग्वेद में [illegible] स्तुतियों की भरमार है, [illegible] यह ज्ञान प्रधान भी माना जाता है. यजुर्वेद जीवन के कर्मपक्ष के बारे में है और इसमें याज्ञिक मंत्रों का संग्रह है. सामवेद की विषयवस्तु उपासना प्रधान है और इसके मंत्रों में अनेक बेहतरीन स्तुतियाँ भी पढ़ी हैं. रचनाक्रम में आखिरी माना गया अथर्ववेद, तत्र के लिहाज से समृद्ध है और इसमें नाना प्रकार के टोने-टोटके भी संजोए गए हैं.

सभी वेदों की अपनी-अपनी संहिताएं हैं. यजुर्वेद को छोड़कर जिसकी कृष्ण और शुक्ल नामक दो संहिताएं हैं, बाकी तीन वेदों की एक-एक संहिता है. ऋग्वेद की संहिता में सिलसिलेवार ढंग से एक हजार अट्ठाइस सूक्त हैं. यजुर्वेद की संहिता में तंत्र-मंत्र की विविध और क्रियाओं का ब्यौरा है. सामवेद की भाषा में गाने योग्य पद हैं, जबकि अथर्ववेदी संहिता की भाषा में मिले-जुले ढंग से गद्य-पद्य का इस्तेमाल हुआ है.

ऋग्वेद- आमतौर पर वेदों का रचनाकाल तीन हजार ईसा पूर्व से डेढ़ हजार ईसा पूर्व माना जाता है. कुछ लोग इन्हें ईसा से पाँच हजार वर्ष पहले की रचना मानते हैं. प्रारंभ- पहल वाचिक परंपरा से बंधे होने की वजह से वेदों का वास कण्ठ में रहा, इसलिए इन्हें स्मृति भी कहते हैं. जैसे-जैसे पाठांतर होते गए और विस्तार होता गया, वैसे-वैसे अकेली याददाश्त के भरोसे रहना कठिन होता गया और इन्हें लिख लिया गया.

ऋग्वेद की रचना कुरू और उत्तर प्रदेश के इलाके में हुई. एक विषय के मंत्र समूह को सूक्त या स्तोत्र कहते हैं. एक हजार अट्ठाइस सूक्तों में कुल दस हजार मंत्र समाए हुए हैं. सबसे बड़े सूक्त में एक सौ चौंसठ और सबसे छोटे में महज दो मंत्र निबद्ध हैं. पूरे ऋग्वेद को आठ मंडलों में बाँटा गया है. इसमें तीन प्रकार के देवताओं का उल्लेख किया गया है-

१. आकाशीय देवता - द्यौ, वरुण, सूर्य, सविता, पूषण, विष्णु और उषा.
२. वायुमंडलीय देवता - इंद्र, मरुत और पर्जन्य.
३. भूमिदेवता - अग्नि और सोम

दूसरे आठवें मंडल के ऋषियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं- गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, कण्व. इसमें विश्वामित्र और वशिष्ठ का रचनाकाल सामयिक है जबकि शेष एक-दो पीढ़ियों के अंतर से हुए. मजे की बात यह है कि उपनयन यानी [illegible] से संबंधित संस्कार का वर्णन [illegible] सबसे पुराने वेद में नहीं है. ऋग्वेद की पाँच शाखाएं हैं- शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, कौषीतकि (शांखायन) और ऐतरेय.

यजुर्वेद- भारत का सबसे पुराना गद्य संजोए यजुर्वेद में आमतौर पर यज्ञ के समय इस्तेमाल किए जाने वाले मंत्र, विधि और उससे जुड़ी क्रियाओं का लेखा-जोखा है. वाक्यों में गुंथी ये विधियाँ यजुष कहलाती हैं. इस वेद की भी पाँच शाखाएं उपलब्ध हैं-काठक, कपिष्ठल कठ, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और वाजसनेयी. पहली चार, कृष्ण यजुर्वेद और पाँचवीं, शुक्ल यजुर्वेद कहलाती है. चार ब्राह्मण हैं- तैत्तिरीय, वल्लभी, कात्यायनी और मैत्रायणी. शुक्ल यजुर्वेद के इकलौते ब्राह्मण हैं- शतपथ.

यज्ञ शब्द का यहाँ जो अर्थ लगाया गया है वह महज वेदी बनाकर 'ॐ स्वाहा' कहते हुए आहुति देने वाले यज्ञ से ही नहीं है. समाज के कल्याण के लिए और पूरी दुनिया के सुमंगल के लिए यज्ञ का विधान किया गया है. यही वजह है कि कर्मकांड के अलावा राजनीति, अर्थनीति, शिल्प, व्यवसाय जैसे विषयों पर इस वेद में उम्दा विवेचन है. इसमें पूरा बल यज्ञ पर दिया गया है और उसे श्रेष्ठ ठहराया गया है. इस तरह यह एक कर्म प्रधान रचना है.

सामवेद- इसके मंत्र मुख्यतः ऋग्वेद से निकले हैं. संगीतबद्धता या लयात्मक होना इसकी खासियत है. इसकी तीन संहिताएं हैं- राणायनीय, जैमिनीय और कौथुम. इसमें भी याज्ञिक मंत्रों की बहुतायत है. ये सभी उपासना प्रधान हैं. इस वेद के आठ ब्राह्मण माने गए हैं- सामविधान, मंत्र, आर्षेय, वंश, देवताध्याय, तलवकार, ताड्य और संहितोप.

अथर्ववेद- रोजमर्रा की समस्याओं-बाधाओं से पीड़ित होकर उन दिनों आम आदमी द्वारा तांत्रिकों और पंडितों के मारन, उच्चाटन (उखाड़ना) जैसी विधियों का अवलंब सहारा लिया गया है. यज्ञ का विधान कर मनचाहे देवता को उसकी मनपसंद आहुति देकर

अपनी कामना पूरी करने के अनेक उपाय इसमें सुझाए गये हैं. इस तरह ऋग्वेद से अथर्ववेद तक की रचना-यात्रा समष्टि से व्यष्टि की ओर मानी जा सकती है.

अथर्ववेद में नीति- [illegible] और सदाचार का सहारा लेकर ग्रह-नक्षत्रों और [illegible] के अनिष्टकारी प्रभावों से बचने के उपाय सुझाए गये हैं. [illegible] जा कर इन मंत्रों का उपयोग स्वार्थ [illegible] के वशीभूत होकर भी किया जाने लगा. इसमें [illegible] पर [illegible] लिखा गया है. गर्भाधान से लेकर [illegible] [illegible] नहीं है इस वेद में? तमाम [illegible] को [illegible] अथर्ववेद ने खुद को एक [illegible] बना लिया.

[illegible]-परम्परा के जरिए एक से दूसरी पीढ़ी को थाती के बतौर सौंपने का काम कठिनतर होता गया. मंत्रों को जैसे का तैसा तभी रखा जा सकता था जब मंत्रकर्ता के अर्थ का सटीक संधान हो सके. इसलिए अब मंत्रों की व्याख्या का सिलसिला शुरू हुआ और इस तरह ब्राह्मण युग की शुरुआत हुई. इस दौरान यज्ञ के उद्देश्य, उसकी विधि और जुड़े कर्मकाण्डों की खासी पड़ताल हुई है. यज्ञकर्ता, मोक्ष-निर्वाण आदि के चक्करों में न पड़कर अपने जीवनकाल में ही सुख-यश और समृद्धि की दावेदारी करने लगा. ब्राह्मण-भाग में व्याख्या का अंश ज्यादा होने से इसकी भाषा गद्यपूर्ण बन गई.

ऋग्वेद के चार ब्राह्मण हुए- कौषीतकि, ऐतरेय, पैंगिरहस्य और शाट्यान. दूसरी ओर सामवेद के आठ ब्राह्मण क्रमशः सामविधान, मंत्र, आर्षेय, वंश, देवताध्याय, तलवकार, ताड्य और संहितोपनिषद् माने गए हैं. शेष बचा अथर्ववेद जिसका इकलौता ब्राह्मण है -गोपथ.

नर्क की कल्पना जो ऋग्वेद में नहीं है अथर्ववेद और उसके ब्राह्मणों में खासी विकसित दिखाई देती है. ऐसा लगता है कि ऐहिक जीवन से परे या कि उसके बाद भी व्यक्ति के जीवन को सतत बनाए रखने की, अधिक बेहतर रूप में संजोए रखने की छटपटाहट ही ब्राह्मण युग की प्रबल चेष्टा रही.

आरण्यक- अरण्यक का अर्थ है- वन या जंगल. इस तरह अरण्यक में है- जंगल की चर्चा. जिन्हें जंगल वास करना है इसमें उनके लिए नियमादि का विधान किया गया है. शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण का आखिरी हिस्सा जिसे बृहदारण्यक कहा जाता है अपने आप में अद्भुत उपनिषद है.

उपनिषद्- पितिरिम सोरोकिन जैसे समाजशास्त्री जहाँ सांस्कृतिक पेण्डुलम की तरह इशारा करते हैं वहीं वे संस्कृति के भौतिक से चरम आध्यात्मिक बिंदु की तरफ खिसकने और फिर विपरीत दिशा में चल पड़ने की बात भी करते हैं. कुछ इसी तरह का मामला वेदांतकालीन समाज का भी है. इस काल में बाहरी लोकाचार और कर्मकाण्ड की तरफ से लोग ऊबने से लगे. ज्ञान की प्यास और गहराई की वजह से चिंतन और मनन के जरिए, आध्यात्मिक उत्थान के रास्तों की खोज शुरू हुई. स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा महत्वपूर्ण बन गई. ब्रह्म, आत्मा, पुनर्जन्म, आध्यात्मिक उन्मेष और मोक्ष में लोगों की रुचि बढ़ गई. इसलिए उपनिषदों की विषयवस्तु भी इन्हीं में से चुनी गई है. रोचक शैली में होने के कारण इनकी भाषा में चमत्कारी पद्य और गद्य का गाढ़ा मेल है कोई सवा सौ के आसपास उपनिषद् रचे गए. इनमें प्रमुख हैं-ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डुक्य, तित्तिर, ऐतरेयस्व, छान्दोग्य आदि. कथ्य व शैली के लिहाज से ये भी उतने ही वजनदार हैं. उपनिषदों के खास अलमबरदार माने जाते हैं- शांडिल्य, दधीच, सनत्कुमार, आरुणि, याज्ञवल्क्य, उद्दालक, रैक, प्रतर्दन, अजातशत्रु, जनक, पिप्पलाद, वरुण, मैत्रेयी और गार्गी. इनमें महिलाओं को भी ऋषि का दर्जा हासिल है.

-अशोक चतुर्वेदी